

वायरसों में विशालता का रिकॉर्ड

चिली के समुद्र से खोजे गए एक जीव को पहले तो एनएलएफ यानी न्यू लाइफ फॉर्म (यानी जीवन का नया रूप) कहा गया था। फ्रांस के आइक्स मार्सेल विश्वविद्यालय के ज़्यां-मिशेल क्लेवेरी और चैंटेल अबर्जेल ने जब इसे देखा था तब यह एक अमीबा के अंदर घुसकर उसे मारने की फिराक में था। सूक्ष्मदर्शी में देखा तो यह काफी बड़ा-सा था, लगभग किसी बैक्टीरिया के बराबर।

फिर उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के एक तालाब के पानी में उसी तरह का एक और जीव देखा। उन्हें स्पष्ट था कि यह एक वायरस है - आज तक खोजा गया सबसे बड़ा वायरस। यह करीब 1 माइक्रोमीटर लंबा और आधा माइक्रोमीटर चौड़ा था। जब इसका जिनेटिक विश्लेषण किया गया तो पता चला कि इसका जीनोम सचमुच विशाल है - लगभग 25 लाख क्षार जोड़ियों से बना यह जीनोम कई बैक्टीरिया और विकसित कोशिकाओं से भी बड़ा है।

साइन्स पत्रिका में इन वायरसों का ज़िक्र सिर्फ विशालता के रिकॉर्ड के लिहाज़ से नहीं किया गया है बल्कि ऐसा माना जा रहा है कि ये जीवन के एक नए रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे इनके जीनोम में मात्र 7 प्रतिशत ऐसे जीन्स हैं जो वर्तमान डैटा बेस से मेल खाते हैं। शेष 93 प्रतिशत

जीन्स आज तक अज्ञात हैं।

ऐसा माना जा रहा है कि जैव विकास की दृष्टि से भी ये महा-वायरस कुछ पहेलियां पेश करते हैं और कुछ पहेलियों को सुलझाते हैं। एक तो यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि अलग-अलग महाद्वीपों पर पाए जाने के बाद यह नहीं कहा जा सकता कि ये किसी कोशिका के अवशेष हैं।

वायरसों की उत्पत्ति, खासकर महा-वायरसों की उत्पत्ति को लेकर कई सिद्धांत व मान्यताएं रही हैं। जैसे कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि इन महा-वायरसों का विकास कोशिकाओं से हुआ है। इस मान्यता के मुताबिक एक समय था जब धरती पर बैक्टीरिया थे, आर्किया थे और केंद्रक युक्त कोशिका वाले जीव थे। इनमें से कुछ कोशिकाओं ने तो वर्तमान जीव रूपों को जन्म दिया जबकि कुछ ने अन्य जीवों में परजीवी की तरह घुसना शुरू किया और वायरस बने। इस सवाल पर तब और रोशनी पड़ेगी जब यह पता चलेगा कि महा-वायरसों का बाकी जीनोम क्या करता है।

इन वायरसों में बैक्टीरिया जैसे कोशिकीय जीवों के कई लक्षण नदारद हैं। जैसे ये अपना प्रोटीन स्वयं नहीं बनाते, एटीपी की मदद से ऊर्जा भी पैदा नहीं कर सकते और विभाजन द्वारा संख्या वृद्धि नहीं करते। (स्रोत फीचर्स)